18/5/20

B.A. Part III
Hindi Hons
सगुण भक्ति काव्य

डॉ० [illegible] कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

(1)

सूर का शृंगार वर्णन

क्रमशः —

कृष्ण के वियोग में गोपियों के नेत्र लगातार बरस रहे हैं। सूर की गोपियों का वियोग वर्णन में विवश विरहिणी की छटपटाहट वेदना है। इनकी वेदना सहृदय पाठक को स्पर्श करने लगता है। सूर ने वेदना का जो साकार रूप खड़ा किया है उसमें कोई हाय-हाय नहीं है। इनकी वेदना को देश और काल की सीमा में हम नहीं बाँध सकते। यह सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक है। यथा —

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पै,
जब ते स्याम सिधारे।

गोपियों का विरह दिन-दिन बढ़ता जाता है। आँखें मोहन के दर्शन की प्यासी हैं —

अँखियाँ हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची,
ये बतियाँ सुनि रूखी।
अवधि गनत इकटक मग जोवत,
तब इती नाहिं झूखी।

सूर का यह विरह एकांगी नहीं है। एक ओर जहाँ गोपियाँ कृष्ण के लिए व्याकुल है वहीं कृष्ण भी गोपियों एवं ब्रजभूमि के लिए व्याकुल हैं। यथा —

ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंससुता की सुंदर कगरी,
अरु कुंजन की छाँही।

अभिलाषा, चिंता, उद्वेग, उन्माद, प्रलाप, व्याधि, जड़ता इत्यादि वियोग की दस दशायें होती हैं। सूर ने गोपियों के वियोग वर्णन के आलोक में इन दसों का वर्णन स्वाभाविक रूप से किया है।

सूर का श्रृंगार — क्रमशः —

प्रकृति के जो उपादान संयोग के समय सुखकर होते हैं वही वियोग के समय दुखकर हो जाते हैं। संयोग के समय चाँद का निकलना, यमुना का बहना, शीतल पवन का चलना तथा मधुबन का हरा-भरा होना सुखकर लगता है तो कृष्ण के वियोग में गोपियों को यह कष्टकर लगता है —

मधुबन तुम कत रहत हरे।
बिरह वियोग स्याम सुंदर के
ठाढ़े क्यों न जरे।

कृष्ण के बिना कुंजें बैरिन हो गई हैं —
बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं,
तब ये लता लगति अति सीतल
अब भई बिषम ज्वाल की पुंजैं।

जायसी के नागमती को भी कार्तिक का चन्द्रमा कष्टकर प्रतीत होता है —

कार्तिक शरद चांद उजियारी।
जग शीतल भई बिरहै जारी॥

इन सबों के बावजूद सूर के श्रृंगार वर्णन में बिहारी आदि के तरह कुछ [illegible], सूर की रचना या ऊहात्मकता का भी प्रयोग हुआ है —

सूर कहूँ बिना करि राखियौ।
सोहै ठगा नाहिं बस हाकयौ,
नाहिन होत चांद को रहियौ।

यह सत्य है कि इनके श्रृंगार वर्णन में कुछ दोष आ गया है। पर इनके गुणों के बीच इनके ये छोटे दोष वैसे छिप जाते हैं जैसे सूर्य के आगे छोटे-छोटे तारे छिप जाते हैं।

इस प्रकार हम स्पष्टतः कह सकते हैं कि श्रृंगार का जितना अधिक मार्मिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है उतना आँख वाले भी न कर सके हैं।